कुदो ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो; इच्चेएहि भेदाभावा ।

**एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं[1] ॥१४१॥**

सुगममेदं सुत्तं ।

**उक्कस्सेण सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, बे सागरोवमसहस्साणि देसूणाणि ॥१४२॥**

तं जधा-एक्को एइंदियट्ठिदिमच्छिदो असण्णिपंचिंदिएसु उववण्णो । पंचहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) भवणवासिय-वाणवेंतरदेवेसु आउअं बंधिदूण (४) विस्संत्तो (५) मदो भवणवासिय-वाणवेंतरदेवेसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (६) विस्संत्तो (७) विसुद्धो (८) उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (९) सासणं गदो । मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो । तसट्ठिदिं परियट्टिदूण अवसाणे सासणं गदो । लद्धमंतरं । तदो तत्थ थावरपाओग्गमावलियाए असंखेज्जदिभागमच्छिदूण कालं गदो

...............................

क्योंकि, जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण अन्तर है, इस प्रकार ओघसे इनके अन्तरमें कोई भेद नहीं है ।

**उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर क्रमशः पल्योपमके असंख्यातवें भाग और अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है ॥१४१॥**

यह सूत्र सुगम है ।

**उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर क्रमशः पूर्वकोटीपृथक्त्वसे अधिक दो हजार सागरोपम और कुछ कम दो हजार सागरोपम है ॥१४२ ॥**

जैसे-एकेन्द्रियकी स्थितिमें स्थित कोई एक जीव असंज्ञी पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ । पांचों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुद्ध हो (३) भवनवासी या वानव्यन्तर देवोंमें आयुको बांधकर (४) विश्राम ले (५) मरा और भवनवासी या वानव्यन्तर देवोंमें उत्पन्न हुआ । छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (६) विश्राम ले (७) विशुद्ध हो (८) उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हो (९) सासादनगुणस्थानको गया । पश्चात् मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हुआ और त्रस जीवोंकी स्थितिप्रमाण परिवर्तन करके अन्तमें सासादनगुणस्थानको गया । इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ । तत्पश्चात् उस सासादनगुणस्थानमें स्थावरकायके योग्य आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक रह कर मरा और स्थावरकायिकोंमे उत्पन्न हुआ ।

...............................

[1] एकजीवं प्रति जघन्येन पल्योपमासंख्येयभागोऽन्तर्मुहूर्तश्च । स.सि.१,८.

**थावरकाएसु उववण्णो। आवलियाए असंखेज्जदिभागेण णवहि अंतोमुहुत्तेहि य ऊणिया तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तट्ठिदी अंतरं होदि।**

**सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे-एक्को एइंदियट्ठिदिमच्छिय जीवो असण्णिपंचिंदिएसु उववण्णो। पंचहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुध्दो (३) भवणवासिय-वाणवेंतरदेवेसु आउअं बंधिय (४) विस्समिय (५) पुव्वुत्तदेवेसु उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (६) विस्संतो (७) विसुद्धो (८) उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (९)। सम्मामिच्छत्तं गदो (१०)। मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो सगट्ठिदिं परिभमिय अंतोमुहुत्तावसेसाए तस-तसपज्जत्तट्ठिदीए सम्मामिच्छत्तं गदो। लद्धमंतरं (११)। मिच्छत्तं गंतूण (१२) एइंदिएसु उववण्णो। बारसअंतोमुहुत्तेहि ऊणिया तस-तसपज्जत्तट्ठिदी उक्कस्संतरं होदि।**

## असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥१४३॥

**सुगममेदं।**

.............................

इस प्रकार आवलीके असंख्यातवें भाग और नौ अन्तर्मुहूर्तोंसे कम त्रसकायिक और त्रसकायिकपर्याप्तकोंकी स्थितिप्रमाण अन्तर होता है।

त्रसकायिक और त्रसकायिकपर्याप्तक सम्यग्मिथ्यादृष्टिका अन्तर कहते हैं-एकेन्द्रिय जीवोंकी स्थितिको प्राप्त कोई एक जीव असंज्ञी पंचेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ। पांच पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुद्ध हो (३) भवनवासी या वानव्यन्तर देवोंमें आयुको बांधकर (४) विश्राम ले (५) पूर्वोक्त देवोंमें उत्पन्न हुआ। छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (६) विश्राम ले (७) विशुद्ध हो (८) उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ (९)। पश्चात् सम्यग्मिथ्यात्वको गया (१०)। पुनः मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हुआ और अपनी स्थितिप्रमाण परिभ्रमण करके त्रसकायिक और त्रसकायिकपर्याप्तककी स्थितिके अन्तर्मुहूर्त अवशेष रह जानेपर सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ। इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ (११)। पीछे मिथ्यात्वको जाकर (१२) एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ। इस प्रकार इन बारह अन्तर्मूहूर्तोंसे कम त्रस और त्रसपर्याप्तकोंकी स्थिति ही उक्त दोनों प्रकारके सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर होता है।

**असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक त्रसकायिक और त्रसकायिकपर्याप्त जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१४३॥**

यह सूत्र सुगम है।

**एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥१४४॥**

**एदं पि सुगमं ।**

**उक्कस्सेण सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, बे सागरोवमसहस्साणि देसूणाणि[1] ॥१४५॥**

**असंजदसम्मादिट्ठिस्स उच्चदे–एक्को एइंदियट्ठिदिमच्छिदो असण्णिपंचिंदियसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु उववण्णो । पंचहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) भवणवासिय–वाणवेंतरदेवेसु आउअं बंधिय (४) विस्संतो (५) कालं करिय भवणवासिएसु वाणवेंतरेसु वा[2] देवेसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (६) विस्संतो (७) विसुद्धो (८) उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (९)। उवसमसम्मत्तद्धाए छावलियावसेसाए आसाणं गदो । अंतरिदो मिच्छत्तं गंतूण सगट्ठिदिं परिभमिय अंते उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (१०) । लद्धमंतरं । पुणो सासणं गदो आवलियाए असंखेज्जदिभागं कालमच्छिदूण एइंदिएसु उववण्णो । दसहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया तस–तसपज्जत्तट्ठिदी उक्कस्संतरं ।**

..............................

**उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१४४॥**

यह सूत्र भी सुगम है ।

**उक्त असंयतादि चारों गुणस्थानवर्ती त्रस और त्रसपर्याप्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक दो सहस्र सागरोपम और कुछ कम दो सहस्र सागरोपम है ॥१४५॥**

इनमेंसे पहले त्रस और त्रसपर्याप्तक असंयतसम्यग्दृष्टिका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं एकेन्द्रियस्थितिको प्राप्त कोई एक जीव असंज्ञी पंचेन्द्रिय सम्मूर्च्छिम पर्याप्तक जीवोंमें उत्पन्न हुआ । पांचों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुद्ध हो (३) भवनवासी या वानव्यन्तर देवोंमें आयुको बांधकर (४) विश्राम ले (५) काल कर भवनवासी या वानव्यन्तर देवोंमें उत्पन्न हुआ । छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (६) विश्राम ले (७) विशुद्ध हो (८) उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ (९) । उपशमसम्यक्त्वके कालमें छह आवलियां अवशेष रहने पर सासादनगुणस्थानको गया और अन्तरको प्राप्त हो मिथ्यात्वमें जाकर आपनी स्थितिप्रमाण परिभ्रमाण परिभ्रमणकर अन्तमें उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ (१०) । इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ । पुनः सासादनगुणस्थानको जाकर वहां आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक रहकर एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ । इस प्रकार इन दश अन्तर्मुहूर्तोंसे कम त्रस और त्रसपर्याप्तककी उत्कृष्ट स्थिति उन्हींके असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर है ।

..............................

[1] उत्कर्षेण द्वे सागरोपमसहस्रे पूर्वकोटीपृथक्त्वैरभ्यधिके । स.सि. १,८.

[2] ता. २ प्रतौ वा इति पाठो नास्ति ।

**संजदासंजदस्स उच्चदे-एक्को एइंदियट्ठिदिमच्छिदो सण्णिपंचिंदियपज्जत्तएसु उववण्णो। असण्णिसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु किण्ण उप्पादिदो? ण, तत्थ संजमासंजमग्गहणाभावा। तिण्णिपक्ख-तिण्णिदिवसेहि अंतोमुहुत्तेण य पढमसम्मत्तं संजमासंजमं च जुगवं पडिवण्णो (१)[1]। पढमसम्मत्तद्धाए छावलियाओ अत्थि त्ति सासणं गदो (२)। अंतरिदो मिच्छत्तं गंतूण सगट्ठिदिं परिभमिय पच्छिमे तसभवे सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे संजमासंजमं पडिवण्णो (३)। लद्धमंतरं। अप्पमत्तो (४) पमत्तो (५) अप्पमत्तो (६)। उवरि खवगसेढिम्हि छ मुहुत्ता। एवं बारस अंतोमुहुत्ताहिय - अट्ठेतालीसदिवसेहि ऊणिया[2] तस-तसपज्जत्तट्ठिदी संजदासंजदुक्कस्संतरं।**

**पमत्तस्स उच्चदे-एक्को एइंदियट्ठिदिमच्छिदो मणुसेसु उववण्णो। गब्भादिअट्ठवस्सेण उवसमसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो (१) पमत्तो (२) हेट्ठा परिवदिय अंतरिदो। सगट्ठिदिं परिभमिय अपच्छिमे भवे सम्मादिट्ठी मणुसो जादो। दंसणमोहणीयं खविय अप्पमत्तो**

..............................

त्रस और त्रसपर्याप्तक संयतासंयतका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं - एकेन्द्रिय जीवोंकी स्थितिमें स्थित कोई एक जीव संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुआ।

**शंका**- उक्त जीवको असंज्ञी सम्मूर्च्छिम पर्याप्तकोंमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया ?

**समाधान** - नहीं, क्योंकि, उनमें संयमासंयमके ग्रहण करनेका अभाव है।

पुनः उत्पन्न होनेके पश्चात् तीन पक्ष, तीन दिवस और अन्तर्मुहूर्तसे प्रथमोपशमसम्यक्त्व और संयमासंयमको एक साथ प्राप्त हुआ (१)। प्रथमोपशमसम्यक्त्वके कालमें छह आवलियां शेष रहने पर सासादनगुणस्थानको गया (२) और अन्तरको प्राप्त हो मिथ्यात्वमें जाकर अपनी स्थितिप्रमाण परिभ्रमण करके अन्तिम त्रसभवमें सम्यक्त्वको ग्रहणकर और दर्शनमोहनीयका क्षय कर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण संसारके अवशिष्ट रहने पर संयमासंयमको प्राप्त हुआ (३)। इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ। पश्चात् अप्रमत्तसंयत (४) प्रमत्तसंयत (५) हुआ अप्रमत्तसंयत (६) हुआ। इनमें क्षपकश्रेणीसम्बन्धी ऊपरके छह अन्तर्मुहूर्त और मिलाये। इस प्रकार बारह अन्तर्मुहूर्तोंसे अधिक अडतालीस दिनोंसे कम त्रस और त्रसपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट स्थिति ही उन संयतासंयत जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर है।

त्रसकायिक और त्रसकायिकपर्याप्त प्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं। एकेन्द्रिय स्थितिको प्राप्त कोई एक जीव मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और गर्भको आदि ले आठ वर्षके पश्चात् उपशमसम्यक्त्व और अप्रमत्त गुणस्थानको एक साथ प्राप्त हुआ (१)। प्रमत्त होकर (२) नीचे गिरा और अन्तर आरम्भ किया। अपनी उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण परिभ्रमण करके अन्तिम भवमें सम्यग्दृष्टि मनुष्य हुआ। पुनः दर्शनमोहनीयका

..............................

[1] ता.१-२ प्रत्योः (२) इति पाठः। [2] ता. २ प्रतौ दिवसे ऊणिया इति पाठः।

**होदूण पमत्तो जादो (३) लद्धमंतरं। भूओ अप्पमत्तो (४)। उवरि छ अंतोमुहुत्ता। एवं अट्ठहि वस्सेहि दसहि अंतोमुहुत्तेहि य ऊणा तस-तसपज्जत्तट्ठिदी उक्कस्संतरं।**

**अप्पमत्तस्स उच्चदे-एक्को थावरट्ठिदिमच्छिदो मणुसेसु उववण्णो गब्भादिअट्ठवस्सेण उवसमसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो (१)। अंतरिदो सगट्ठिदिं परिभमिय पच्छिमे भवे मणुसो जादो। सम्मत्तं पडिवण्णो दंसणमोहणीयं खविय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे विसुद्धो अप्पमत्तो जादो (२)। लद्धमंतरं। तदो पमत्तो (३) अप्पमत्तो (४)। उवरि छ अंतोमुहुत्ता। एवमट्ठहि वस्सेहि दसहि अंतोमुहुत्तेहि य ऊणिया तस-तसपज्जत्तट्ठिदी उक्कस्संतरं।**

**चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च ओघं[1] ॥१४६॥**

**सुगममेदं।**

**एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं[2] ॥१४७॥**

..............................

क्षय करके अप्रमत्तसंयत हो प्रमत्तसंयत हुआ (३)। इस प्रकार अन्तर लब्ध हो गया। पुनः अप्रमत्तसंयत हुआ (४)। इनमें ऊपरके छह अन्तर्मुहूर्त और मिलाये। इस प्रकार दश अन्तर्मुहूर्त और आठ वर्षोंसे कम त्रस और त्रसपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट स्थिति ही उन अप्रमत्तसंयत जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर है।

त्रसकायिक और त्रसकायिकपर्याप्त अप्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं-स्थावरकायकी स्थितिमें विद्यमान कोई एक जीव मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और गर्भको आदि ले आठ वर्षसे उपशमसम्यक्त्व और अप्रमत्त गुणस्थानको एक साथ प्राप्त हुआ (१)। पश्चात् अन्तरको प्राप्त हो अपनी स्थितिप्रमाण परिभ्रमणकर अन्तिम भवमें मनुष्य हुआ। सम्यक्त्वको प्राप्त कर पुनः दर्शनमोहनीयका क्षय कर संसारके अन्तर्मुहूर्त अवशिष्ट रह जानेपर विशुद्ध हो अप्रमत्तसंयत हुआ (२)। इस प्रकार अन्तर लब्ध हो गया। तत्पश्चात् प्रमत्तसंयत (३) और अप्रमत्तसंयत हुआ (४)। इनमें ऊपरके क्षपकश्रेणीसम्बन्धी छह अन्तर्मुहूर्त और मिलाए। इस प्रकार आठ वर्ष और दश अन्तर्मुहूर्तोंसे कम त्रस और त्रसपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट स्थिति ही उन अप्रमत्तसंयत जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर है।

**त्रसकायिक और त्रसकायिकपर्याप्त चारों उपशामकोंका उन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान अन्तर है ॥१४६॥**

यह सूत्र सुगम है।

**चारों उपशामकोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१४७॥**

..............................

[1] चतुर्णामुपशमकानां नानाजीवापेक्षया सामान्यवत्। स.सि. १,८.

[2] एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः स.सि. १,८.

एदं पि सुगमं ।

**उक्कस्सेण बे सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, बे सागरोवमसहस्साणि देसूणाणि[1] ॥१४८॥**

जधा पंचिंदियमग्गणाए चदुण्हमुवसामगाणमंतरपरूवणा परूविदा, तधा एत्थ वि णिरवयवा परूवेदव्वा ।

**चदुण्हं खवा अजोगिकेवली ओघं[2] ॥१४९॥**

सुगममेदं ।

**सजोगिकेवली ओघं ॥१५०॥**

एदं पि सुगमं ।

**तसकाइयअपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्तभंगो ॥१५१॥**

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टमिच्चेएहि पंचिंदियअपज्जत्तेहिंतो तसकायइयअपज्जत्ताणं भेदाभावा ।

..............................

यह सूत्र भी सुगम है ।

**उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर क्रमशः पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक दो सहस्र सागरोपम तथा कुछ कम दो सहस्र सागरोपम है ॥१४८॥**

जिस प्रकारसे पंचेन्द्रियमार्गणामें चारों उपशामकोंकी अन्तरप्ररूपणा प्ररूपित की है, उसी प्रकार यहांपर भी सामस्त्यरूपसे अविकल प्ररूपणा करनी चाहिए ।

**चारों क्षपक और अयोगिकेवलीका अन्तर ओघके समान है ॥१४९ ॥**

यह सूत्र भी सुगम है ।

**सयोगिकेवलीका अन्तर ओघके समान है ॥१५०॥**

यह सूत्र भी सुगम है ।

**त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तकोंका अन्तर पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके अन्तरके समान है ॥१५१॥**

क्योंकि, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, एक जीवकी अपेक्षा जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहणप्रमाण, उत्कर्षसे अनन्तकालात्मक असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन है; इस प्रकार पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंसे त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तकोंके अन्तरमें कोई भेद नहीं है ।

..............................

१ उत्कर्षेण द्वे सागरोपमसहस्रे पूर्वकोटीपृथक्त्वैरभ्यधिके । स.सि. १,८.

२ शेषाणां पंचेन्द्रियवत् । स.सि. १,८.

**एदं कायं पडुच्च अंतरं। गुणं पडुच्च उभयदो वि णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥१५२॥**

सुगममेदं सुत्तं।

एवं कायमग्गणा समत्ता।

**जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगीसु कायजोगि-ओरालियकायजोगीसु मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजद-सजोगिकेवलीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं[1] ॥१५३॥**

कुदो ? अप्पिदजोग[2] सहिदअप्पिदगुणट्ठाणाणं सव्वकालं संभवादो। कधमेगजीवमासेज्ज अंतराभावो? ण ताव जोगंतरगमणेणंतरं संभवदि. मग्गणाए विणासापत्तीदो। ण च अण्णगगुणगमणेण अंतरं संभवदि, गुणंतरं गदस्स जीवस्स जोगंतरगमणेण विणा पुणो आगमणाभावादो। तम्हा एगजीवस्स वि णत्थि चेव अंतरं।

..............................

**यह अन्तर कायकी अपेक्षा कहा है। गुणस्थानकी अपेक्षा दोनों ही प्रकारसे अन्तर नहीं है, निरंतर है ॥१५२॥**

यह सूत्र सुगम है।

इस प्रकार कायमार्गणा समाप्त हुई।

**योगमार्गणाके अनुवादसे पांचों मनोयोगी, पांचों वचनयोगी, काययोगी और औदारिककाययोगियोंमें, मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत और सयोगिकेवलियोंका अन्तर कितने काल होता है? नाना जीवोंकी और एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१५३॥**

क्योंकि, सूत्रोक्त विवक्षित योगोंसे सहित विवक्षित गुणस्थान सर्वकाल संभव हैं।

**शंका**-एक जीवकी अपेक्षा अन्तरका अभाव कैसे कहा ?

**समाधान**-सूत्रोक्त गुणस्थानोंमें न तो अन्य योगमें गमनद्वारा अन्तर संभव है, क्योंकि, ऐसा मानने पर विवक्षित मार्गणाके विनाशकी आपत्ति आती है। और न अन्य गुणस्थानमें जानेसे भी अन्तर संभव है, क्योंकि, दूसरे गुणस्थानको गये हुए जीवके अन्य योगको प्राप्त हुए विना पुनः आगमनका अभाव है। इसलिए सूत्रमें बताये गये जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता है।

..............................

[1] योगानुवादेन कायवाङ्मानसयोगिनां मिथ्यादृष्ट्यसंयतसम्यग्दृष्टिसंयतासंयतप्रमत्ताप्रमत्तसयोगकेवलिनां नानाजीवापेक्षया एकजीवापेक्षया च नास्त्यन्तरम्। स.सि. १,८.

[2] ता. १ प्रतौ पगद इति पाठ :।

**सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं[1] ॥१५४॥**

सुगममेदं ।

**उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥१५५॥**

कुदो । दोण्हं रासीणं सांतरत्तादो । सांतरत्ते वि अहियमंतरं किण्ण होदि ? सहावदो ।

**एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं[2] ॥१५६॥**

कुदो । गुण-जोगंतरगमणेहि तदसंभवा ।

**चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च ओघं[3] ॥१५७॥**

कुदो ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वासपुधत्तमिच्चेएहि ओघादो भेदाभावा ।

..............................

**उक्त योगवाले सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय अन्तर है ॥१५४ ॥**

यह सूत्र सुगम है ।

**उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ॥१५५॥**

क्योंकि, ये दोनों ही राशियां सान्तर हैं ।

**शंका**- राशियोंके सान्तर रहने पर भी अधिक अन्तर क्यों नहीं होता है ?

**समाधान**- स्वभावसे ही अधिक अन्तर नहीं होता है ।

**उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरंतर है ॥१५६॥**

क्योंकि, अन्य गुणस्थानों और अन्य योगोंमें गमनद्वारा उनका अन्तर असंभव है ।

**उक्त योगवाले चारों उपशामकोंका अन्तर कितने काल तक होता है । नाना जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान अन्तर है ॥१५७ ॥**

क्योंकि, जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे वर्षपृथक्त्व अन्तर है, इस प्रकार ओघके अन्तरसे इनके अन्तरमें कोई भेद नहीं है ।

..............................

१ सासादनसम्यग्दृष्टिसम्यग्मिथ्यादृष्ट्योर्नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् । स.सि. १,

२ एकजीवं प्रति नास्त्यन्तरम् । सि.स. १.८.

३ चतुर्णामुपशमकानां नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् । स.सि. १,८.

**एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं[1] ॥१५८॥**

जोग-गुणंतरगमणेण[2] तदसंभवा। एगजोगपरिणमणकालादो गुणकालो संखेज्जगुणो त्ति कधं णव्वदे; एगजीवस्स अंतराभावपदुप्पायणसुत्तादो।

**चदुण्हं खवाणमोघं[3] ॥१५९ ॥**

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं, उक्कस्सेण छम्मासं; एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरमिच्चेदेहि भेदाभावा।

**ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अतरं, णिरंतरं ॥१६० ॥**

तम्हि जोग-गुणंतरसंकंतीए अभावादो।

**सासणसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च ओघं ॥१६१॥**

**एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१५८॥**

क्योंकि, अन्य योग और अन्य गुणस्थानमें गमनद्वारा उनका अन्तर असंभव है।

**शंका**- एक योगके परिणमन-कालसे गुणस्थानका काल संख्यातगुणा है, यह कैसे जाना जाता है?

**समाधान**-एक जीवके अन्तरका अभाव बतानेवाले सूत्रसे जाना जाता है कि एक योगके परिवर्तन-कालसे गुणस्थानका काल संख्यातगुणा है।

**उक्त योगवाले चारों क्षपकोंका अन्तर ओघके समान है ॥१५९॥**

नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय, उत्कर्षसे छह मास अन्तर है, तथा एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है; इस प्रकार ओघसे अन्तरमें कोई भेद नहीं है।

**औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीव और एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१६०॥**

क्योंकि, औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें योग और गुणस्थानके परिवर्तनका अभाव है।

**औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अन्तर कितने कालतक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर ओघके समान है ॥१६१ ॥**

१ एकजीवं प्रति नास्त्यन्तरम्। स.सि. १,८.　　२ ता. १ प्रतो-गमणेहि इति पाठः।

३ चतुर्णां क्षपकाणामयोगकेवलिनां च सामान्यवत्। स.सि. १,८.

कुदो? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो; इच्चेदेहि ओघादो भेदाभावा।

**एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं[1] ॥१६२॥**

कुदो। तत्थ जोगंतरगमणाभावा। गुणंतरं गदस्स वि पडिणियत्तिय सासणगुणेण तम्हि चेव जोगे परिणमणाभावा।

**असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥१६३॥**

कुदो? देव-णेरइय-मणुसअसंजदसम्मादिट्ठीणं मणुसेसु उप्पत्तीए विणा मणुसअसंजदसम्मादिट्ठीणं तिरिक्खेसु उप्पत्तीए विणा एगसमयं असंजदसम्मादिट्ठिविरहिद-ओरालियमिस्सकायजोगस्स संभवादो।

**उक्कस्सेण वासपुधत्तं[2] ॥१६४ ॥**

तिरिक्ख-मणुस्सेसु वासपुधत्तमेत्त[3] कालमसंजदसम्मादिट्ठीणमुववादाभावा।

**एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं[1] ॥१६५॥**

क्योंकि, जघन्यसे एक समय, और उत्कर्षसे पल्योपमका असंख्यातवां भाग अन्तर है, इस प्रकार ओघसे कोई भेद नहीं है।

**उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१६५॥**

क्योंकि, औदारिकमिश्रकाययोगकी अवस्थामें अन्य योगमें गमनका अभाव है। तथा अन्य गुणस्थानको गये हुए भी जीवके लौटकर सासादनगुणस्थानके साथ उसी ही योगमें परिणमनका अभाव है।

**औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय अन्तर है ॥१६३॥**

क्योंकि, देव , नारकी और मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंका मनुष्योंमें उत्पत्तिके विना, तथा मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंका तिर्यंचोंमें उत्पत्तिके विना असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे रहित औदारिकमिश्रकाययोगका एक समयप्रमाण काल सम्भव है।

**औदरिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्वप्रमाण है ॥१६४॥**

क्योंकि , तिर्यंच और मनुष्योंमें वर्षपृथक्त्वप्रमाण कालतक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका उत्पाद नहीं होता है।

**औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१६५॥**

१ ता. प्रतौ णिरंतरं इति पाठो नास्ति। २ ता. १ प्रतौ मासपुधत्तं इति पाठः।
३ ता. १ प्रतौ मासपुधत्तमेत्त इति पाठः।

तम्हि तस्स गुण-जोगंतरसंकंतीए अभावा।

**सजोगिकेवलीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥१६६॥**

कुदो ? कवाडपज्जायविरहिदकेवलीणमेगसमओवलंभा।

**उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥१६७॥**

कवाडपज्जाएण विणा केवलीण वासपुधत्तच्छणसंभवादो।

**एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥१६८॥**

कुदो? जोगंतरमगंतूण ओरालियमिस्सकायजोगे चेव ट्ठिदस्स अंतरासंभवा।

**वेउव्वियकायजोगीसु चदुट्ठाणीणं मणजोगिभंगो ॥१६९॥**

कुदो। णाणेगजीवं पडुच्च अंतराभावेण साधम्मादो।

**वेउव्वियमिस्सकाय[1] जोगीसु मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥१७०॥**

.............................

क्योंकि, औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवमें उक्त गुणस्थान और औदारिकमिश्रकाययोगके परिवर्तनका अभाव है।

**औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवली जिनोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय अन्तर है ॥१६६॥**

क्योंकि, कपाटपर्यायसे रहित केवली जिनोंका एक समय अन्तर पाया जाता है।

**औदारिकमिश्रकाययोगी केवली जिनोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ॥१६७॥**

क्योंकि, कपाटपर्यायके विना केवली जिनोंका वर्षपृथक्त्व तक रहना संभव है।

**औदारिकमिश्रकाययोगी केवली जिनोंका एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१६८॥**

क्योंकि,अन्य योगको नहीं प्राप्त होकर औदारिकमिश्रकाययोगमें ही स्थित केवलीके अन्तरका होना असंभव है।

**वैक्रियिककाययोगियोंमें आदिके चारों गुणस्थानवर्ती जीवोंका अन्तर मनोयोगियोंके समान है ॥१६९॥**

क्योंकि, नाना जीव और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरका अभाव होनेसे दोनोंमें समानता है।

**वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टियोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय अन्तर है ॥१७०॥**

.............................

[1] ता. १ प्रतौ- कायमिस्सकाय इतिपाठः।

**तं जहा–वेउव्वियमिस्सकायजोगिमिच्छादिट्ठिणो सव्वे वेउव्वियकायजोगं गदा। एग-समयं वेउव्वियमिस्सकायजोगो मिच्छादिट्ठीहि विरहिदो दिट्ठो। विदियसमए सत्तट्ठ जणा वेउव्वियमिस्सकायजोगे दिट्ठा। लद्धमेगसमयमंतरं।**

## उक्कस्सेण बारस मुहुत्तं ॥१७१॥

**तं[1] जधा–वेउव्वियमिस्समिच्छादिट्ठीसु वेउव्वियकायजोगं गदेसु बारस मुहुत्तमेत्तमंतरिय पुणो सत्तट्ठजणेसु वेउव्वियमिस्सकायजोगं पडिवण्णेसु बारसमुहुत्तंत्तरं होदि।**

## एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥१७१॥

**तत्थ जोग–गुणंतरगमणाभावा।**

## सासणसम्मादिट्ठि–असंजदसम्मादिट्ठीणं ओरालियमिस्सभंगो ॥१७३॥

**कुदो? सासणसम्मादिट्ठीणं णाणाजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण एगसमयं, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, तेहि[2] एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं। तेण असंजदसम्मादिट्ठीणं**

जैसे–सभी वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीव वैक्रियिककाययोगको प्राप्त हुए। इस प्रकार एक समय वैक्रियिकमिश्रकाययोग, मिथ्यादृष्टि जीवोंसे रहित दिखाई दिया। द्वितीय समयमें सात आठ जीव वैक्रियिकमिश्रकाययोगमें दृष्टिगोचर हुए। इस प्रकार एक समय अन्तर उपलब्ध हुआ।

**वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर बारह मुहूर्त है ॥१७१॥**

जैसे–सभी वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके वैक्रियिककाययोगको प्राप्त हो जाने पर बारह मुहूर्तप्रमाण अन्तर होकर पुनः सात आठ जीवोंके वैक्रियिकमिश्रकाययोगको प्राप्त होनेपर बारह मुहूर्तप्रमाण अन्तर होता है।

**वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१७२॥**

क्योंकि, उन वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टियोंके अन्य योग और अन्य गुणस्थानमें गमनका अभाव है।

**वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका अन्तर औदारिकमिश्रकाययोगियोंके समान है ॥१७३॥**

क्योंकि, सासादनसम्मग्दृष्टियोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर क्रमशः एक समय और पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, इनसे एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है।

[1] ता. २ प्रतौ तं इति पाठो नास्ति। [2] ता. १-२ प्रतौ 'भागत्तेहि' इति पाठः।

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सगयएगसमय-मासपुधत्तंतरेण,[1] एगजीवं पडुच्च अंतराभावेण च तदो भेदाभावा।

**आहारकायजोगीसु आहारमिस्स[2]कायजोगीसु पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥१७४॥**

सुगममेदं।

**उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥१७५॥**

एदं पि सुगमं चेव[3]।

**एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥१७६॥**

तम्हि जोग-गुणंतरग्गहणाभावा।

**कम्मइयकायजोगीसु मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठि-सजोगिकेवलीणं ओरालियमिस्सभंगो ॥१७७॥**

............................

इससे, असंयतसम्यग्दृष्टियोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य एक समय और उत्कृष्ट मासपृथक्त्व अन्तर होनेसे, तथा एक जीवकी अपेक्षा अन्तरका अभाव होनेसे इन वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादन और असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अन्तरमें कोई भेद नहीं है।

**आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयतोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय अन्तर है ॥१७४॥**

यह सूत्र सुगम है।

**उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ॥ १७५॥**

यह सूत्र भी सुगम ही है।

**आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयतोंका एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१७६॥**

क्योंकि, आहारककाययोग या आहारकमिश्रकाययोगमें अन्य योग या अन्य गुणस्थानके ग्रहण करनेका अभाव है।

**कार्मणकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवलियोंका अन्तर औदारिकमिश्रकाययोगियोंके समान है ॥१७७॥**

............................

[1] ता. १, प्रतौ पुधत्तणेण इति पाठः। [2] ता. १ प्रतौ जोगि-आहारमिस्स इति पाठः।

[3] मु. प्रतौ सुगममेव इति पाठ :।

मिच्छादिट्ठीणं णाणेगजीवं पडुच्च अंतराभावेण; सासणसम्मादिट्ठीणं णाणाजीवगयएयसमय-पलिदोवमासंखेज्जदिभागंतरेहि, एगजीवगयअंतराभावेण; असंजदसम्मादिट्ठीणं णाणाजीवगयएयसमयमास-पुधत्तंतरेहि, एगजीवगयअंतराभावेण; सजोगिकेवलिणाणा-जीवगयएगसमय-वासपुधत्तेहि, एगजीवगयअंतराभावेण च दोण्हं समाणत्तुवलंभा।

एवं जोगमग्गणा समत्ता।

**वेदाणुवादेण इत्थिवेदएसु[1] मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं[2] ॥१७८॥**

सुगममेदं सुत्तं[3]।

**एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं[4] ॥१७९॥**

कुदो ? इत्थिवेदमिच्छादिट्ठिस्स दिट्ठमग्गस्स अण्णगुणं गंतूण पडिणियत्तिय लहुं मिच्छत्तं पडिवण्णस्स अंतोमुहुत्तंतरुवलंभा।

**उक्कस्सेण पणवण्ण पलिदोवमाणि देसूणाणि[5] ॥१८०॥**

..............................

क्योंकि, मिथ्यादृष्टियोंका नाना जीव और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरका अभाव होनेसे; सासादनसम्यग्दृष्टियोंका नाना जीवगत जघन्य एक समय और उत्कृष्ट पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण अन्तरसे, तथा एक जीवगत अन्तरके अभावसे; असंयतसम्यग्दृष्टियोंका नाना जीवगत जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर मासपृथक्त्वसे, तथा एक जीवगत अन्तरका अभाव होनेसे; सयोगिकेवलियोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य एक समय और उत्कृष्ट वर्षपृथक्त्व अन्तरोंसे, तथा एक जीवगत अन्तरका अभाव होनेसे औदारिकमिश्रकाययोगी और कार्मणकाययोगी; इन दोनोंकी समानता पाई जाती है।

इस प्रकार योगमार्गणा समाप्त हुई।

**वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१७८॥**

यह सूत्र सुगम है।

**उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१७९॥**

क्योंकि, दृष्टमार्गी स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवके अन्य गुणस्थानको जाकर और लौटकर शीघ्र ही मिथ्यात्वको प्राप्त होनेपर अन्तर्मुहूर्त अन्तर पाया जाता है।

**स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पचपन पल्योपम है ॥१८०॥**

..............................

१ ता. २-मु. प्रत्योः- वेदेसु इतिपाठः। २ वेदानुवादेन स्त्रीवेदेषु मिथ्यादृष्टेर्नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम्। स.सि. १,८. ३ ता. १ प्रतौ सुत्तं इति पाठो नास्ति। ४ एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः। स.सि. १,८.
५ उत्कर्षेण पंचपंचाशत्पल्योपमानि देशोनानि। स.सि. १,८.

तं जहा-एक्को पुरिसवेदो णउंसयवेदो वा अट्ठावीसमोहसंतकम्मिओ पणवण्ण-पलिदोवमाउट्ठिदिदेवीसु[1] उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो अंतरिदो अवसाणे आउअं बंधिय मिच्छत्तं गदो। लद्धमंतरं (४)। सम्मत्तेण बद्धाउअत्तादो सम्मत्तेणेव णिग्गदो (५) मणुसो जादो। पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि पणवण्ण पलिदोवमाणि उक्कस्संतरं होदि। छप्पुढविणेरइएसु सोहम्मादिदेवेसु च सम्माइट्ठी बद्धाउओ पुव्वं मिच्छत्तेण णिस्सारिदो। एत्थ पुण पणवण्णपलिदोवमाउट्ठिदिदेवीसु तहा ण णिस्सारिदो। एत्थ कारणं जाणिय वत्तव्वं।

**सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च ओघं[2] ॥१८१॥**

सुगममेदं।

**एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं[3] ॥१८२॥**

.............................

जैसे-मोहनीयकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला कोई एक पुरुषवेदी, अथवा नपुंसकवेदी जीव, पचपन पल्योपमकी आयुस्थितिवाली देवियोंमें उत्पन्न हुआ! छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुद्ध हो (३) वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होकर अन्तरको प्राप्त हुआ और आयुके अन्तमें आगामी भवकी आयुको बांधकर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ। इस प्रकार अन्तर लब्ध होगया (४)। सम्यक्त्वके साथ आयुके बांधनेसे सम्यक्त्वके साथ ही निकला (५) और मनुष्य हुआ। इस प्रकार पांच अन्तर्मुहूर्तोंसे कम पचपन पल्योपम स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टिका उत्कृष्ट अन्तर होता है।

पहले आदेशप्ररूपणामें छह पृथिवियोंके नारकियोंमें तथा सौधर्मादि देवोंमें बद्धायुष्क सम्यग्दृष्टि जीव मिथ्यात्वके द्वारा निकाला था। किन्तु यहां पचपन पल्योपमकी आयुस्थितिवाली देवियोंमें उस प्रकारसे नहीं निकाला। यहांपर इसका कारण जानकर कहना चाहिए।

**स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान अन्तर है ॥१८१॥**

यह सूत्र सुगम है।

**स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर क्रमशः पल्योपमका असंख्यातवां भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥१८२॥**

.............................

१ ता. १ प्रतौ 'देवेसु' इति पाठः।

२ सासादनसम्यग्दृष्टिसम्यग्मिथ्यादृष्ट्योर्नानाजीवापेक्षया सामान्यवत्। स.सि. १,८.

३ एकजीवं प्रति जघन्येन पल्योपमासंख्येयभागोऽन्तर्मुहूर्तश्च। स.सि. १,८.

एदं पि सुत्तं सुगममेव।

**उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं[1] ॥१८३॥**

तं जहा–एक्को अण्णवेदट्ठिदिमच्छिदो सासणद्धाए एगो समओ अत्थि त्ति इत्थिवेदेसु उववण्णो एगसमयं सासणगुणेण दिट्ठो। विदियसमए मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो। त्थीवेदट्ठिदिं परिभमिय अवसाणे त्थीवेदट्ठिदीए एगसमयावसेसाए सासणं गदो। लध्दमंतरं। मदो वेदंतरं गदो। बेहि समएहि ऊणयं पलिदोवमसदपुधत्तमंतरं लद्धं।

सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे–एक्को अट्ठावीसमोहसंतकम्मिओ अण्णवेदो देवीसु उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो (४) मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो। त्थीवेदट्ठिदिं परिभमिय अंते सम्मामिच्छत्तं गदो (५)। लद्धमंतरं। जेण गुणेण आउअं बद्धं तं गुणं पडिवज्जिय अण्णवेदे उववण्णो (६)। एवं छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया त्थीवेदट्ठिदी सम्मामिच्छत्तुक्कस्संतरं होदि।

.............................

यह सूत्र भी सुगम ही है।

**स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर पल्योपमशतपृथक्त्व है ॥१८३॥**

जैसे अन्य वेदकी स्थितिको प्राप्त कोई एक जीव सासादनगुणस्थानके कालमें एक समय अविशिष्ट रहने पर स्त्रीवेदियोंमें उत्पन्न हुआ और एक समय सासादनगुणस्थानके साथ दिखाई दिया। द्वितीय समयमें मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हुआ। स्त्रीवेदकी स्थितिप्रमाण परिभ्रमण करके अन्तमें स्त्रीवेदकी स्थितिमें एक समय अवशेष रहने पर सासादनगुणस्थानको गया। इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ। पुनः मरा और अन्य वेदको प्राप्त हो गया। इस प्रकार दो समयोंसे कम पल्योपमशतपृथक्त्वकाल स्त्रीवेदी सासादनसंम्यग्दृष्टि जीवका उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ।

अब सम्यग्मिथ्यादृष्टि स्त्रीवेदी जीवका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं - मोहनीयकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला कोई अन्यवेदी जीव देवियोंमें उत्पन्न हुआ। छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुद्ध हो (३) सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ (४)। पश्चात् मिथ्यात्वको प्राप्त होकर अन्तरको प्राप्त हुआ। स्त्रीवेदकी स्थितिप्रमाण परिभ्रमणकर अन्तरमें सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ। (५)। इस प्रकार अन्तर लब्ध हो गया। पीछे जिस गुणस्थानसे आयुको बांधा था, उसी गुणस्थानको प्राप्त होकर अन्य जीवोंमें उत्पन्न हुआ (६)। इस प्रकार छह अन्तर्मुहूर्तोंसे कम स्त्रीवेदकी स्थिति सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवका उत्कृष्ट अन्तर होता है।

.............................

[1] उत्कर्षेण पल्योपमशतपृथक्त्वम्। स.सि. १,८.

**असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अतरं, णिरंतरं[1] ॥१८४॥**

सुगममेदं ।

**एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं[2] ॥१८५॥**

कुदो ? अण्णगुणं गंतूण पडिणियत्तिय तं चेव गुणमागदाणमंतोमुहुत्तंतरुवलंभा ।

**उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं[3] ॥१८६॥**

असंजदसम्मादिट्ठिस्स उच्चदे । तं जहा–एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ देवीसु[4] उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो (४)। मिच्छत्तं गदो अतंरिदो त्थीवेदट्ठिदिं परिभमिय अंते उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (५) लध्दमंतरं । छावलियावसेसे पढमसम्मत्तकाले सासणं गंतूण मदो वेदंतरं गदो । पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणयं पलिदोवमसदपुधत्तमंतरं होदि । देसूणवयणं सुत्ते किण्ण कदं ?

.............................

**असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती स्त्रीवेदियोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१८४॥**

यह सूत्र सुगम है ।

**उक्त गुणस्थानवाले स्त्रीवेदियोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१८५॥**

क्योंकि, अन्य गुणस्थानको जाकर और लौटकर उसी ही गुणस्थानको आये हुए जीवोंका अन्तर्मुहूर्त अन्तर पाया जाता है ।

**उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर पल्योपमशतपृथक्त्व है ॥१८६॥**

इनमेंसे पहले स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं–मोहकी अट्ठाईस कर्मप्रकृतियोंकी सत्तावाला कोई एक जीव देवियोंमें उत्पन्न हुआ । छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुद्ध हो (३) वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ (४) । पश्चात् मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हो, स्त्रीवेदकी स्थितिप्रमाण परिभ्रमणकर अन्तमें उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ (५) । इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ । प्रथमोपशमसम्यक्त्वके कालमें छह आवलियां अवशेष रहने पर सासादनगुणस्थानको जाकर मरा और अन्य वेदको गया । इस प्रकार पांच अन्तर्मुहूर्तोंसे कम पल्योपमशतपृथक्त्वप्रमाण अन्तर होता है ।

.............................

१ असंयतसम्यग्दृष्ट्याद्यप्रमत्तान्तानां नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम् । स.सि १,८.

२ एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्त : । स.सि. १,८. ३ उत्कर्षेण पल्योपमशतपृथक्त्वम् । स.सि. १,८.

४ मु. प्रतौ देवेसु इति पाठ : ।

**ण, पुधत्तणिद्देसेणेव तस्स अवगमादो ।**

**संजदासंजदस्स उच्चदे-एक्को अट्ठावीससमोहसंतकम्मिओ अण्णवेदो त्थीवेदेसु उववण्णो बे मासे गब्भे अच्छिदूण णिक्खंतो दिवसपुधत्तेण विसुद्धो वेदगसम्मत्तं संजमासंजमं च जुगवं पडिवण्णो (१) । मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो त्थीवेदट्ठिदिं परिभमिय अंते पढमसम्मत्तं देससंजमं च जुगवं पडिवण्णो (२) । आसाणं गंतूण मदो देवो जादो । बेहि मुहुत्तेहि दिवसपुधत्ताहिय-बेमासेहि य ऊणा त्थीवेदट्ठिदी उक्कस्संतरं होदि ।**

**पमत्तस्स उच्चदे-एक्को अट्ठावीससमोहसंतकम्मिओ अण्णवेदो त्थीवेदमणुसेसु उववण्णो । गब्भादिअट्ठवस्सिओ वेदगसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो (१) । पुणो पमत्तो जादो (२) । मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो त्थीवेदट्ठिदिं परिभमिय पमत्तो जादो । लद्धमंतरं (३) । मदो देवो जादो । अट्ठवस्सेहि तीहिं अंत्तोमुहुत्तेहि ऊणिया त्थीवेदट्ठिदी लद्धमुक्कस्संतरं । एवमप्पमत्तस्स वि उक्कस्संतरं भाणिदव्वं, विसेसाभावा ।**

..............................

**शंका**- सूत्रमें 'देशोन' ऐसा वचन क्यों नहीं कहा ?

**समाधान**- नहीं, क्योंकि, 'पृथक्त्व' इस पदके निर्देशसे ही उस देशोनताका ज्ञान हो जाता है।

स्त्रीवेदी संयतासंयत जीवका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं-मोहनीयकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला कोई एक अन्यवेदी जीव, स्त्रीवेदियोंमें उत्पन्न हुआ । दो मास गर्भमें रह कर निकला और दिवसपृथक्त्वसे विशुद्ध हो वेदकसम्यक्त्व और संयमासंयमको एकसाथ प्राप्त हुआ (१) । पश्चात् मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हो स्त्रीवेदकी स्थितिप्रमाण परिभ्रमण कर अन्तमें प्रथमोपशमसम्यक्त्व और देशसंयमको एक साथ प्राप्त हुआ (२) । पुनः सासादन गुणस्थानको जाकर मरा और देव हो गया । इस प्रकार दो मुहूर्त और दिवसपृथक्त्वसे अधिक दो माससे कम स्त्रीवेदकी स्थिति स्त्रीवेदी संयतासंयतका उत्कृष्ट अन्तर होता है ।

स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं-मोहकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला कोई एक अन्यवेदी जीव, स्त्रीवेदी मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । गर्भको आदि लेकर आठ वर्षका हो वेदकसम्यक्त्व और अप्रमत्त गुणस्थानको एक साथ प्राप्त हुआ (१) । पुनः प्रमत्तसंयत हुआ (२) । पश्चात् मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हो स्त्रीवेदकी स्थितिप्रमाण परिभ्रमणकर अन्तमें प्रमत्तसंयत हुआ । इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ (३) । पश्चात् मरा और देव हुआ । इसप्रकार आठ वर्ष और तीन अन्तर्मुहूर्तोंसे कम स्त्रीवेदकी स्थितिप्रमाण उत्कृष्ट अन्तर लब्ध हुआ ।

इसी प्रकारसे स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयतका भी उत्कृष्ट अन्तर कहना चाहिए, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है ।

**दोण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्समोघं[1] ॥१८७॥**

कुदो? एगसमय-वासपुधत्तंतरेहि ओघादो भेदाभावा।

**एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं[2] ॥१८८॥**

सुगममेदं।

**उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं[3] ॥१८९॥**

तं जहा-एक्को अण्णवेदो अट्ठावीसमोहसंतकम्मिओ त्थीवेदमणुसेसुववण्णो। अट्ठवस्सिओ सम्मत्तं संजमं च जुगवं पडिवण्णो (१)। अणंताणुबंधी विसंजोइय (२) दंसणमोहणीयमुवसामिय (३) अप्पमत्तो (४) पमत्तो (५) अप्पमत्तो (६) अपुव्वो (८) अणियट्टी (८) सुहुमो (९) उवसंतो (१०) भूओ पडिणियत्तो सुहुमो (११) अणियट्टी (१२) अपुव्वो (१३) हेट्ठा पडिदूणंतरिदो त्थीवेदट्ठिदिं भमिय अवसाणे संजमं पडिवज्जिय कदकरणिज्जो होदूण अपुव्वुवसामगो जादो। लद्धमंतरं। तदो णिद्दा -

**स्त्रीवेदी अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, इन दोनों उपशामकोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर ओघके समान है ॥१८७॥**

क्योंकि, जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है, इनकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है।

**उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१८८॥**

यह सूत्र सुगम है।

**उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर पल्योपमशतपृथक्त्व है ॥१८९॥**

जैसे-मोहकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला कोई एक अन्यवेदी जीव, स्त्रीवेदी मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और आठ वर्षका होकर सम्यक्त्व और संयमको एक साथ प्राप्त हुआ (१)। पश्चात् अनन्तानुबन्धी कषायका विसंयोजन कर (२) दर्शनमोहनीयका उपशम कर (३) अप्रत्तसंयत (४) प्रमत्तसंयत (५) अप्रमत्तसंयत (६) अपूर्वकरण (७) अनिवृत्तिकरण (८) सूक्ष्मसाम्पराय (९) और उपशान्तकषाय (१०) होकर पुनः प्रतिनिवृत्त हो सूक्ष्मसाम्पराय (११) अनिवृत्तिकरण (१२) और अपूर्वकरणसंयत हो (१३) नीचे गिरकर अन्तरको प्राप्त हुआ और स्त्रीवेदकी स्थितिप्रमाण परिभ्रमण कर अन्तमें संयमको प्राप्त हो कृतकृत्यवेदक होकर अपूर्वकरण उपशामक हुआ। इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ। पीछे निद्रा और प्रचालके बंध-विच्छेद हो

१ द्वयोरुपशमकयोर्नानाजीवापेक्षया सामान्यवत्। स.सि. १,८.

२ एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः। स.सि. १,८.

३ उत्कर्षेण पल्योपमशतपृथक्त्वम्। स.सि. १,८.

पयलाणं बंधे वोच्छिण्णे मदो देवो जादो । अट्ठवस्सेहि तेरसंतोमुहुत्तेहि य अपुव्वकरणद्धाए सत्तमभागेण च ऊणिया सगट्ठिदी अंतरं । अणियट्टिस्स वि एवं चेव । णवरि बारस अंतोमुहुत्ता एगसमओ च वत्तव्वो ।

**दोण्हं खवाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं[1] ॥१९०॥**

सुगममेदं ।

**उक्कस्सेण वासपुधत्तं[2] ॥१९१॥**

अपसत्थत्थीवेदाणं[3] वासपुधत्तेण विणा अण्णस्स अंतरस्स अणुवलंभादो ।

**एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं[4] ॥१९२॥**

सुगममेदं ।

**पुरिसवेदएसु मिच्छादिट्ठी ओघं[5] ॥१९३॥**

..............................

जाने पर मरा और देव हो गया । इस प्रकार आठ वर्ष और तेरह अन्तर्मुहूर्तोंसे, तथा अपूर्वकरण-कालके सातवें भागसे हीन अपनी स्थितिप्रमाण उत्कृष्ट अन्तर है । अनिवृतिकरण उपशामकका भी इसी प्रकारसे अन्तर हौता है । विशेष बात यह है कि उनके तेरह अन्तर्मुहूर्तोंके स्थानपर बारह अन्तर्मुहूर्त और एक समय कम कहना चाहिए ।

**स्त्रीवेदी अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, इन दोनों क्षपकोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय अन्तर है ॥१९०॥**

यह सूत्र सुगम है ।

**स्त्रीवेदी अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण क्षपकोंका उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ।१९१॥**

क्योंकि, अप्रशस्त स्त्रीवेदियोंका वर्षपृथक्त्वके अतिरिक्त अन्य अन्तर नहीं पाया जाता है ।

**एक जीवकी अपेक्षा उक्त दोनों गुणस्थानवर्ती जीवोंका अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१९२॥**

यह सूत्र सुगम है ।

**पुरुषवेदियोंमें मिथ्यादृष्टियोंका अन्तर ओघके समान है ॥१९३॥**

..............................

१ द्वयोः क्षपकयोर्नानाजीवापेक्षया जघन्येनैकः समयः । स.सि. १,८.

२ उत्कर्षेण वर्षपृथक्त्वम् । स.सि. १,८.

३ ता. १ प्रतौ अप्पभूत्तवेदाणं, मु. प्रतौ अप्पमत्तत्थीवेदाणं इति पाठः ।

४ एकजीवं प्रति नास्त्यन्तरम् । स.सि. १,८. ५ पुंवेदेषु मिथ्यादृष्टेः सामान्यवत् । स.सि. १,८.